2626503

कुल पृष्ठ संख्या 24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय Sanskrit

परीक्षा का दिन Saturday

दिनांक 8-04-23

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	2	19	4
2	2½	20	4
3	2	21	4
4	10	22	4
5	3	23	4
6	3½	24	
7	3	25	
8	3	26	
9	4	27	
10	2	28	
11	6	29	
12	3	30	
13	2	31	
14	2	योग	78
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2		
17	3	अंकों में	शब्दों में
18	3	78	अठत्तर

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 59155

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 175/2023

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड अ

1+1 =2

प्र. 1 (i) (अ) सहोदरौ

(ii) (स) असत्यम्

2+1+1+0 =2½

प्र. 2 (i) (स) धूमम् + मुञ्चति

(ii) (अ) अन्तः + जगति (सत्वम्)

(iii) (ब) सच्चित् (श्चुत्वम्)

(iv) (द) हरित्रात् (लोपः)

1+1 =2

प्र. 3 (i) (ब) न + अव + सीदति

(ii) (स) निर् + अर्थकम्

10

1+1+1+1+1 1+1+1+1+1

प्र. 4 (क) (i) (ब) स्वार्थत्यागः

(ii) (अ) भारतीया संस्कृति

(iii) (स) भारतीय सभ्यतायाः

(iv) (द) साफल्याय

(ख) (i) गीतायां त्यागभावना प्रकटिता।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) भारतीया संस्कृतिः परेषाम् कल्याणं मनुते।

ग) (i) भारतीयसभ्यता पुनः परेषाम् उपकाराय निजस्वार्थानि त्यक्तुं प्रेरयति।

(ii) भारतीय संस्कृतिः सर्वथा ~~उपभोगसंस्कृतिः सर्वानि भोगमेव शिक्षयति~~, आध्यात्मिकी, भोग स्थाने योगमेव शिक्षयति।

(घ) भारतीय संस्कृतिः

(ङ) मानव जीवनस्य साफल्यं त्यागेनैव भवितुमर्हति न तु भोगेन संस्कृति सर्वथा उपभोगसंस्कृतिः सर्वानि भोगमेव शिक्षयति, भारतीयसभ्यता पुनः परेषाम् उपकाराय निजस्वार्थानि त्यक्तुं प्रेरयति, वैदिक महर्षिभिः बहुकालं पूर्वमेव त्यागस्य महिमा उद्घोषितः।

प्र.5 (i) महान् च असौ वृक्षः - कर्मधारय समास

(ii) पिककाकयोः → द्वन्द्व समास

(iii) [redacted] बहुव्रीहि समास ⇒ विमुद्धी यस्य सः

प्र.6 (i) द्वितीया विभक्ति 'विना' योगे।

(ii) तृतीया विभक्ति 'सह' योगे।

(iii) षष्ठी विभक्ति 'समीपे' योगे।

BSER-175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) षष्ठी विभक्ति ~~मम~~ 'मम' योगे।

प्र.7 (i) ~~शङ्कनीय~~ अत्यादरः शङ्कनीय।

1+1+1 =3

(ii) ~~महा + कम्प~~ कम्प + ल्युट महान + कम्प + ल्युट जनयति।

(iii) सम् + त्व इति तथ्यतः।

प्र.8 (i) वर्षाकाले सर्वत्र जलोपप्लवः भवति,

1+1+1 =3

(ii) अपि कुशलं महाराजस्य।

(iii) योजकः तत्र दुर्लभः।

प्र.9 (क) (i) आवाम् यमलौ।

1+1+1+1 =4

(ii) गुरवे नमः।

(ख) (i) युवां कार्यं ~~कुरु~~ कुरुथः।

(ii) गुरोः छात्राः ज्ञानं लभन्ते।

प्र.10 (i) त्रिंशत् अधिक शतम् - 130

1+1 =2

(ii) पञ्चचत्वारिंशत् अधिक चतुः शतम् - 445

6

प्र.11 (अ) (i) चातकः विपासितः म्रियते।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) चाणक्यः मणिकार श्रेष्ठिनं चन्दनदासम् द्रष्टुम् इच्छति।

(v) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।

(iv) आत्मनः श्रेयः इच्छन् नरः अहितम् कर्म न कुर्यात्।

प्र (आ) (i) हरिततरूणां ललितलतानां माला रमणीया।

(ii) बुद्धिमती गहनकानने व्याघ्रं ददर्श।

(iv) उपनयनोपदेशेन सम्बन्धेन वाल्मीकिः लवकुशयोः गुरुः।

(vi) वसन्तस्य गुणं पिकः वेत्ति।

प्र.12 (i) कस्मै नृपाणां चीयते?

(ii) कस्याः द्वे नामनी?

(iii) कः तान् अपृच्छत?

प्र.13 अन्वयः → प्रजानाम् सुखे राज्ञः सुखं अस्ति, प्रजानाम् हितम् राज्ञः हितम् अस्ति, आत्मप्रियं न राज्ञः हितम् अस्ति, प्रजानां प्रियं तु राज्ञः हितम् अस्ति।

प्र.14 (i) हंसः श्वेतः बकः श्वेतः को भेदो बकहंसयोः,
नीरक्षीरविभागे तु हंसो हंसः बको बकः॥

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(11) ~~संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।~~
~~उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।~~ → Last page.

प्र.15 संकेत => कज्जलमलिनं - - - - - - - - - - - ध्वानम्।

संदर्भ => प्रस्तुत पद्यांश वयम् पाठ्यपुस्तक: 'शेमुषी भाग-2' के अध्याय शुचिपर्यावरणम् संङ्कलितो अस्ति।

2

प्रसंग => अस्मिन पद्यांशे नगरस्य कोलाहलं प्रदूषणं वर्णन अस्ति। अस्मिन पाठस्य लेखक हरिदत्त शर्मा अस्ति। इयम पाठ: 'लसल्लतिका' नाम ग्रंथात संङ्कलिता अस्ति।

व्याख्या - कवि कथयति यत नगरेषु तु शत शकटीयानम् कज्जल इव मलिनम् धूमं मुञ्चति धावति। अत्र वाष्पयानमाला ध्वानम् वितरन्ती संधावति। अत्र भूरि: प्रदूषणम् अस्ति।

विशेष =>
i) समास प्रयोग: अस्ति => कज्जल मलिनं = कज्जल इव मलिनम्।
ii) पद्यांशस्य भाषा सरल: अस्ति।
iii) संधी प्रयोग: अस्ति => संधावति => सम + धावति।

प्र.16 एक बार बुद्धिमती नाम की युवती अपने दो पुत्रों के साथ किसी काम से पिता के घर जाती है। रास्ते में जंगल में उसे एक बाघ दिखाई देता है। वह एक उपाय सोचती है और अपने दोनों पुत्रों को चपेट लगाकर कहती है कि तुम

2

BSER-175/2023

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

दोनो बाघ खाने के लिए ~~लड़~~ लड़ाई मत करो, आधा-आधा बाँटकर खा लो। यह सुनकर वह बाघ वहाँ से ~~भा~~ भाग जाता है। रास्ते में उसे ~~वह~~ एक सियार मिलता है। सियार कहता है कि तुम मनुष्यों से भी डरते हो, वह युवती कोई बाघ मारने वाली नही है, वह कहाँ है तुम मुझे वहाँ ले चलो। ~~अगर वह~~ वह बाघ सियार को लेकर उसी स्थान पर जाता है। सियार को बाघ के साथ देखकर बुद्धिमती सब समझ जाती है और सियार से कहती है कि तुमने पहले तो मुझे तीन बाघ दिये थे, आज एक बाघ ही क्यों दे रहे हो, यह सुनकर वह शेर वहाँ से भाग जाता है।
अतः कहा गया है कि बुद्धिमान लोग हर कठिनाई को पार कर लेते हैं।

प्र. 17 (i) एकः बुभुक्षितः शृगालः भोजनार्थं वने ~~इतस्त~~ इतस्ततः भ्रमतिस्म।

(ii) एकस्मिन स्थाने सः द्राक्षलताम् अपश्यत्।

(iii) लतायां बहुनि पक्वानि द्राक्षफलानि आसन्।

(iv) तानि खादितुं सः नैकवारं प्रयासम् अकरोत्।

(v) परं तथापि द्राक्षाफलानि न ~~प्राप्नोत~~ प्राप्नोत्।

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vi) 'एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि' इति कथयित्वा कुपितः शृगालः ततः पलायितः ।

प्र. 18 (i) केशवः शनैः शनैः ~~चल~~ लिखति ।

1+1+1 =3 (iv) ~~ल~~ आवाम पाठशालाः गच्छावः ।

(vi) ते ~~संस्कृतं~~ संस्कृतं संस्कृतः वदन्ति ।

प्र. 19 (i) नमस्ते

4 (ii) कुशलम

(iii) रक्षाबन्धन दिवसे

(iv) संस्कृत दिवसम

(v) गीतम

(vi) भाषणम

(vii) संस्कृतभाषा

(viii) मेदूयम

प्र. 20 संकेत ⇒ ~~~~ भूमौ — — — — आ~~रोहति~~ । शोभते ।
— — — — —

Previous PathShala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक से संस्कृत के पाठ- 5 जननीतुल्यवत्सला से लिया गया है।

5

प्रसंग → इस पद्यांश में सुरभि गाय और देवराज इंद्र के मध्य की बातचीत को दर्शाया गया है।

व्याख्या → भूमि पर गिरे अपने पुत्र को देखकर सभी गायों की माता सुरभि की आँखों से आँसु निकल आए। सुरभि गाय की इस अवस्था को देखकर देवताओं के राजा इन्द्र ने उससे पुछा - " हे प्रिये, क्यों रो रही हो?"
"सुरभि गाय कहती है- " हे इन्द्र, अपने पुत्र की दीन दशा को देखकर मैं रो रही हुँ।"

विशेष → (i) पद्यांश की भाषा सरल है।
(ii) इसमें संधि का प्रयोग हुआ है। → सुराधिप:
(iii) इसमें प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। → दृष्ट्वा।

प्र.2 संकेत → संपत्तौ .... तथा।

5

संदर्भ → प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक शेमुषी भाग 2 के पाठ 6 सुभाषितानि से लिया गया है।

प्रसंग → इस श्लोक में महान् लोगों के गुणों को दर्शाया गया है, इसे सुर्य को अस्त और उदय के बारे में भी दर्शाया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या => महान लोग संपति और विपति मे एक जैसा स्वरूप रखते है, वे कभी बुरे वक्त मे दुखी नहीं होते ना कभी अच्छे वक्त में ज्यादा खुश होते है, जिस प्रकार सुर्य उदय होते समय भी लाल होता है और अस्त होते समय भी लाल ही होता है।

विशेष => (i) श्लोक की भाषा सहज और सरल है,
(ii) इस श्लोक मे गुण संधि का प्रयोग हुआ है - महतामेकरूपता।
(iii) यहा द्वन्द्व समास का प्रयोग हुआ है - संपतौ च विपत्तौ च।

प्र. 27 संकेत => विदुषकः — — — मुहुर्त मात्रम, — — — —

संदर्भ => प्रस्तुत नाट्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक शेमुषी के भाग-2 के पाठ -5 शिशुलालनम से लिया गया है।

5

प्रसंग => इस नाट्यांश मे राम, लव, और विदुषक के मध्य की वार्तालाप को दर्शाया गया है।

व्याख्या => विदूषक => मैं फिर से पुछता हुँ। क्या नाम है तुम दोनो की माता का?

लव => उनके दो नाम है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विदूषक => किस प्रकार से,

लव => तपोवनवासी उन्हें 'देवी' इस नाम से बुलाते हैं, और भगवान वाल्मीकि उन्हें 'वधु' कहकर बुलाते हैं।

राम => इसके अलावा भी कोई नाम है। क्षण भर।

विशेष => नाट्यांश की भाषा सरल है।
(i) कारक विभक्तियों का प्रयोग हुआ है- वयस्य।
(ii) दीर्घ संधि का प्रयोग हुआ है- देवीति।

प्र 23 (i) नमोनमः
(ii) कथम
(iii) ~~स्वास्थ्यम~~ कुशली
(iv) जन्मदिनम्
(v) आगमिष्यामि
(vi) भवतः
(vii) स्वास्थ्यम
(viii) मिलावः

BSER-175/2023

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	प्र.15. (i)	गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो, बली बलं वेत्ति न ~~वेत्त~~ वेत्ति निर्बलः। पिकोः वसन्तस्य गुणं न वायसः। कारी च सिंहस्य~~बलं~~ बलं न मुषकः।

समाप्त

Previous Pathshala